IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"कृषि और विकसित भारत@2047"

***डॉ. अनिल कुमार**
असि. प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,
श्री बजरंग पी. जी. कॉलेज,
सिकंदरपुर, बलिया, उत्तर प्रदेश

Abstract

भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाने वाला कृषि क्षेत्र विकसित भारत@2047 की संकल्पना को साकार करने में निर्णायक भूमिका निभा सकता हैं। स्वतंत्रता के बाद भारत ने खाद्य सुरक्षा, उत्पादन और तकनीकी प्रगति के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, किंतु आज भी कृषि क्षेत्र अनेक संरचनात्मक और पर्यावरणीय चुनौतियों से जूझ रहा है। विकसित भारत का लक्ष्य केवल औद्योगिक और शहरी विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें ग्रामीण समृद्धि, किसानों की आय में वृद्धि, संसाधनों का सतत उपयोग और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारत की सशक्त उपस्थिति भी सम्मिलित है। यदि वर्तमान में कृषि की समस्याओं को दूर किया जाय और कृषि को आधुनिक, लाभकारी और टिकाऊ बनाया जाए तो भारत को विकसित देश बनाया जा सकता है।

Key words- कृषि, आजीविका, जनसंख्या, हरित क्रांति, खाद्य सुरक्षा, नवाचार, विकसित भारत@2047, समग्र विकास, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, डिजिटल मंडी, फसल बीमा, आत्मनिर्भर।

परिचय- भारत एक प्राचीन कृषि सभ्यता वाला देश है, जहाँ कृषि केवल आजीविका का साधन ही नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का आधार भी रही है। आज भी देश की एक बड़ी जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि और उससे जुड़े कार्यों पर निर्भर है। स्वतंत्रता के समय भारत खाद्यान्न की दृष्टि से आत्मनिर्भर नहीं था, किंतु हरित क्रांति के माध्यम से देश ने खाद्य सुरक्षा प्राप्त की। वर्तमान समय में 'विकसित भारत' की परिकल्पना के अंतर्गत यह आवश्यक हो गया है कि कृषि को केवल उत्पादन तक सीमित न रखते हुए उसे आय, रोजगार, नवाचार और निर्यात से जोड़ा जाए। इस संदर्भ में कृषि का समग्र विकास, विकसित भारत@2047 की नींव सिद्ध हो सकता है।

कृषि की वर्तमान स्थिति- भारतीय कृषि में विगत दशकों में कई सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिले हैं। उच्च उत्पादक किस्मों के बीज, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, उर्वरकों और कृषि यंत्रों के प्रयोग से उत्पादन में वृद्धि हुई है। इसके बावजूद भारतीय कृषि की संरचना मुख्यतः छोटे और सीमांत किसानों पर आधारित है। जोतों का विखंडन, पारंपरिक खेती पर निर्भरता और सीमित पूँजी निवेश कृषि की उत्पादकता को प्रभावित करते हैं। कृषि का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान धीरे-धीरे घटा है, परंतु रोजगार के क्षेत्र में इसकी भूमिका अब भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण बनी हुई है। आज कृषि की राष्ट्रीय आय में लगभग 14-16% योगदान है और लगभग 50-54% आबादी आजीविका हेतु कृषि पर निर्भर है।

कृषि क्षेत्र की प्रमुख चुनौतियाँ-

भारतीय कृषि अनेक जटिल चुनौतियों का सामना कर रही है। जलवायु परिवर्तन के कारण अनियमित वर्षा, तापमान में वृद्धि, सूखा और बाढ़ जैसी समस्याएँ फसल उत्पादन को प्रभावित कर रही हैं। दूसरी ओर, आधुनिक तकनीकों और वैज्ञानिक जानकारी की सीमित पहुँच छोटे किसानों के लिए एक बड़ी बाधा है। किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य न मिल पाना, बाजार व्यवस्था की जटिलता और बिचौलियों की भूमिका भी कृषि को अलाभकारी बनाती है।
इसके अतिरिक्त, मिट्टी की उर्वरता में कमी, जल संसाधनों का अति दोहन और रासायनिक उर्वरकों पर अत्यधिक निर्भरता कृषि के सतत विकास के लिए गंभीर चुनौती प्रस्तुत करती है।

विकसित भारत@2047 की संकल्पना और कृषि-

विकसित भारत@2047 की संकल्पना बहुआयामी है, जिसमें उच्च जीवन स्तर, आर्थिक स्थिरता, सामाजिक समावेशन और पर्यावरणीय संतुलन शामिल हैं। इस लक्ष्य की प्राप्ति में कृषि की भूमिका विचारणीय है, क्योंकि भारत की बड़ी आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है।
यदि कृषि क्षेत्र समृद्ध होगा, तो ग्रामीण आय बढ़ेगी, गरीबी में कमी आएगी और आंतरिक मांग को प्रोत्साहन मिलेगा। इसके साथ ही कृषि आधारित उद्योगों, खाद्य प्रसंस्करण और निर्यात को बढ़ावा देकर भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपनी स्थिति मजबूत कर सकता है।

कृषि विकास में टेक्नोलॉजी की भूमिका-

आधुनिक प्रौद्योगिकी कृषि को विकसित भारत की दिशा में ले जाने का एक प्रभावी माध्यम है। सटीक कृषि, ड्रोन तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल प्लेटफॉर्म किसानों को बेहतर निर्णय लेने में सहायता कर सकते हैं। मौसम पूर्वानुमान, मृदा स्वास्थ्य कार्ड और डिजिटल मंडियाँ किसानों की लागत कम करने और आय बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रही हैं।
यदि इन तकनीकों की पहुँच छोटे और सीमांत किसानों तक सुनिश्चित की जाए, तो कृषि क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन संभव है।

सतत और पर्यावरण अनुकूल कृषि-

विकसित भारत के लिए केवल उत्पादन वृद्धि पर्याप्त नहीं है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण भी उतना ही आवश्यक है। सतत कृषि पद्धतियाँ जैसे जैविक खेती, प्राकृतिक खेती, फसल विविधीकरण और जल संरक्षण तकनीकें दीर्घकालीन कृषि विकास की कुंजी हैं। ये पद्धतियाँ न केवल पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखती हैं, बल्कि किसानों की लागत को भी कम करती हैं। इस प्रकार सतत कृषि विकसित भारत के आर्थिक और पर्यावरणीय लक्ष्यों के बीच संतुलन स्थापित करती है।

कृषि, ग्रामीण विकास और आत्मनिर्भरता-

आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा में कृषि का विशेष स्थान है। बीज, उर्वरक, कृषि यंत्र और प्रसंस्करण के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बना सकती है।
कृषि आधारित सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों के विकास से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और पलायन की समस्या में कमी आएगी। इस प्रकार कृषि, आत्मनिर्भर और विकसित भारत के निर्माण का आधार बन सकती है।

नीतिगत सुधार और संस्थागत समर्थन-

कृषि के समग्र विकास के लिए प्रभावी नीतिगत सुधार आवश्यक हैं। किसानों को सुलभ ऋण, फसल बीमा, भंडारण सुविधाएँ और बाजार तक सीधी पहुँच प्रदान करना अनिवार्य है। सहकारी संस्थाओं, किसान उत्पादक संगठनों और सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से कृषि को अधिक संगठित और लाभकारी बनाया जा सकता है। विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है, जो नवाचार और ज्ञान प्रसार के माध्यम से कृषि विकास को गति दे सकते हैं। परन्तु जिस प्रकार विश्वविद्यालयों में नीतिगत समस्याएं आ रही है उनको देखते हुए भारत के युवाओं के सामने अनेक चुनौतियां है, भारत कृषि प्रधान देश है अतः निश्चित ही शिक्षण संस्थानों में किसानों के बच्चे अध्ययन करते है, कई बार इन बच्चों को कृषि हेतु अपनी मांगों के लिए संघर्ष करना पड़ता है, साथ ही विश्वविधालयों में भी इन्हीं बच्चों को संघर्ष करना पड़ता है।

तिवारी, विनीत कुमार (2026) के एक शोध पत्र में विकसित भारत के लिए उत्तरदायी, जागरूक एवं लोकतांत्रिक युवा नागरिकों के निर्माण की आवश्यकता को रेखांकित करता है। अध्ययन बताता है कि डिजिटल युग में छात्रों की सकारात्मक भागीदारी, संवाद-आधारित नीति निर्माण तथा पारदर्शी शैक्षिक शासन सामाजिक विश्वास को सुदृढ़ करते हैं। ऐसे तत्व विकसित भारत 2047 के समावेशी, नवाचारी और सशक्त शिक्षा तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

निष्कर्ष- कृषि और विकसित भारत@2047 के बीच गहरा और अविभाज्य संबंध है। यदि कृषि क्षेत्र को आधुनिक तकनीक, सतत पद्धतियों और प्रभावी नीतियों के माध्यम से सशक्त किया जाए, तो भारत का विकसित राष्ट्र बनना संभव है। कृषि का विकास न केवल किसानों की आय में वृद्धि करेगा, बल्कि ग्रामीण-शहरी असमानता को कम करते हुए समग्र राष्ट्रीय विकास को भी गति देगा। अतः यह कहा जा सकता है कि एक सुदृढ़, टिकाऊ और लाभकारी कृषि व्यवस्था ही विकसित भारत की मजबूत नींव रख सकती है। हम जितना कृषि का समग्र विकास करेंगें, उतना ही विकसित भारत@2047 के लक्ष्य को साकार करेंगें।

संदर्भ-

1. भारत सरकार. (2022). कृषि सांख्यिकी एक दृष्टि में. कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय.
2. भारत सरकार. (2023). किसानों की आय दोगुनी करने की नीति रूपरेखा. नीति आयोग.
3. कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय. (2021). राष्ट्रीय कृषि नीति: प्रमुख बिंदु. भारत सरकार.
4. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद. (2020). भारत में सतत कृषि विकास. आईसीएआर प्रकाशन.
5. शर्मा, ए. (2019). भारत में कृषि विकास में प्रौद्योगिकी की भूमिका. भारतीय ग्रामीण विकास पत्रिका.
6. सिंह, आर. एवं पी. कुमार. (2020). भारतीय कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था. भारतीय कृषि अर्थशास्त्र पत्रिका.
7. www.drishtiias.com
8. icar.org.in
9. Dr. Vinit Kumar Tiwari,Mr. Avneesh Chandra Sonker,"From Campus to Streets: A Comparative Cross-National Study of Generation Z Student Protest Movements in the Digital Age", International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), ISSN:2320-2882, Volume.14, Issue 8, pp.a297-a308, August 2026
   https://doi.org/10.56975/ijcrt.v14i8.312337